salary-earners, and big farmers invested their life's earnings in the Swarna Finance and Investment Limited with a view to getting back their deposits to meet the expenses on the education, marriage, etc., of their children. But after collecting the money, the management suddenly announced on 1st December, 1988, that they were stopping the acceptance of deposits, that they would consolidate their business till the end of June, 1989, and would begin paying back the deposits afterwards. They paid only 14 per cent interest in the so-called period of consolidation and when the time for paying back the deposits came, they disappeared from the scene. Absconding and hiding somewhere in Bombay, they managed to declare insolvency, leaving no immovable property and assets. Some of the cheated depositers. ...(*Time-bell*) This is a very important issue, Madam.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): All issues are important.

SHRI MOTURU HANUMANTHA RAO: Some of the cheated depositers by big business people. That is why I am seriously concerned about it.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): But we have the time constraint.

SHRI MOTURU HANUMANTHA RAO: Some of the cheated depositers shocked at this big swindling approached the Governments of Karnataka, Andhra Pradesh and even the Reserve Bank of India for relief and redressal of their plight but of no avail.

Hence I urge upon the Government of India to immediately move in the matter by entrusting the case to CBI for a prompt enquiry and take action against these notorious swindlers of peoples' money.

Nine Surajmal group of diamond and jewel merchants are behind this loot of citizens' property. I want to know whether there is any control of these financial institutions by the Reserve Bank of India and if so, how this could take place.

It is no surprise to see that the same diamond merchants spent 40 crores of rupees for a reception as was mentioned by the Finance Minister Shri Madhu Dandavate on the floor of this House on 30th March. So, I urge upon the Government to set up a CBI enquiry immediately on this issue and see that the depositors are paid their deposits.

SHRI M. M. JACOB (Kerala): Madam, I have one submission. According to our Rajya Sabha Bulletin the time is up to 5.00 P.M. Today the Business Advisory Committee has not met as usual to extend the time beyond 5.00 I do not have any objecton to finish the special mentions, but I request you to kindly take up the other Business tomorrow.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): There are just two more special mentions.

THE LEADER OF THE HOUSE (SHRI M. S. GURUPADASWAMY): If the House agrees, we can take up the Constitution Amendment Bill tomorrow as a first item and will have voting between one and one-thirty.

SHRI MAKHAN LAL FOTEDAR (Uttar Pradesh): Let it be between one and two.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY: Anyway, we will have voting at 1.00 O'clock. It may go up to 1.30 or 1.45. Later on in the evening we can take up other business.

Problems of Jammu and Kashmir Migrants

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया (बिहार) : उपसभाध्यक्ष जी, मैं कश्मीरी विस्थापितों के बारे में इस सदन को बताना चाहता हूं और आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता

हूं कि पिछले दिसम्बर के महीने से जो घटनायें कश्मीर में घटी और उन घटनाओं को सामने रखते हुए वहां की सरकार गिराई गई, उसके बाद वहां का गवर्नर बदला गया और जो हालात वहां हुए और जहां वहां पर षडयंत्र चला इस देश को तोडने का और आतंकवादियों को जेल से छोडने का, इन सारी घटनाओं ने कश्मीरी लोगों को बाध्य कर दिया कि कश्मीर की घाटी छोड़ कर वह चाहे किसी की छत्रछाया में जाकर शरणपात्र हो और यही मजबूरी थी कि इस दुनिया के स्वर्ग कश्मीर के रहने वाले वासी कश्मीरी अपना स्वर्ग जैसा घर छोड़ कर दिल्ली की गली-गली में भटकने के लिए आ गया ।

महोदया, बड़ा अफ़सोस होता है, लाखों की तादाद में आए हुएयह माइग्रेंट जब अपना दुख और तकलीफ़ लेकर सरकारी अफ़सरों के पास जाते हैं, तो उनको दुत्कार पर अलग कर दिया जाता है । इसके पहले उनको कहा गया कि तुम कश्मीर चले जाओ, हम तुम्हें दिल्ली में नहीं रख सकते और दिल्ली में रखना नहीं चाहते ।

महोदया, बड़े अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि आखिर ये जायें कहां ? आज हालात ऐसे हैं कि कश्मीर का गवर्नर अपने राजभवन में नहीं रह सकता, काश्मीर का गवर्नर अपनी पूरी पुलिस गारद और बी० एस० एफ० की गारद और कमांडो फ़ोर्सेज के साथ खुले रास्ते पर नहीं घूम सकता तो वह कैसे उम्मीद करते हैं कि एक साधारण कश्मीरी, एक साधारण पंडित अपनी पोथी, अपने जनेऊ और अपने तिलक की रक्षा के लिए वहां रह सके ? यह कैसे हो सकता है कि सिख अपने सिए पर पगडी रखकर वहां रास्ते पर घूम सके । यह हालात हैं और तरह-तरह के प्रेशर क्रिएट किए जा रहे हैं । वहां किसी एक खास मजहब का रास्ता अपनाने के लिए, एक खास मुल्क की करेंसी को मानने के लिए, एक खास मुल्क की बात मानने के लिए मजबूर किया जा रहा है । उस के बारे में सरकार क्या सोचती है ?

महोदया, बात कुछ और होती है तो शायद मैं यहां खड़ा होकर अपनी बात नहीं कहता । मगर मुझे कहना पड़ रहा है कि जब ये दुख और तकलीफ़ के मारे लोग प्रधान मंत्री निवास पर अपनी बात कहने के लिए पहुंचे तो वहां कोई उनकी आरती नहीं की गयी, न दीपक जलाकर स्वागत किया गया, वहां बच्चों को दूध और भूसे की रोटी के लिए नहीं पूछा गया, वरन उन्हें लाठियों से और डंडों से पीटा गया । उन्होंने वहां गयी जवान लडकियों को भी नहीं बख्शा । सुनीता सफ़ाया नाम की एक लड़की को पुलिस अफ़सर ने खींचकर मारा, पीटा और जख्मी कर दिया । प्रोसेशन में गये छोटे-छोटे बच्चे, नौजवान और बूढे मां-बाप जो अपनी बात कहने के लिए प्रधान मंत्री निवास पर पहुंचे, लेकिन उन्हें डंडे से पीटा गया । महोदया, मैं इस स्पेशल मेंशन के माध्यम से इसकी भर्त्सना करता हूं । धिक्कार है सरकार को कि हम उनकी सुरक्षा नहीं कर सकते, उन्हें खाने के लिए रोटी नहीं दे सकते, हम उन्हें दवाइयां नहीं दे सकते । जब वे अपनी ग्रीवेंसेज लेकर हमारे पास आते हैं तो उन पर लाठियां बरसाते हैं ।

महोदया, मैं आपके माध्यम से सरकार से गुजारिश करूंगा कि वह इन काश्मीरी विस्थापितों के बारे में एक पालिसी बनायें, कम से कम एक निर्णय लें कि उन को कैसे रखा जाएगा ? कुछ लोगों ने और कुछ पार्टियों ने मिलकर कहीं धर्मशाला में, कहीं गुरुद्वारों में, मंदिरों में उनके ठहरने की व्यवस्था की है । परन्तु यह व्यवस्था सरकार को करनी थी । यह सरकार अभी तक क्यों सो रही है । महोदया, मैं आपके माध्यम से एक रिहैबिलिटेशन प्रोग्राम की अपील करता हूं कि इनके बसाने की व्यवस्था की जाए । ये विस्थापित दिल्ली में ही नहीं आये, वरन् अमृतसर में, लुधियाना में भी हैं, राजस्थान में भी हैं और गुजरात तक पहुंचे हैं । जहां जिसका कोई रिश्तेदार है, जानने वाला है, दोस्त है वहां-वहां पहुंचे हैं । इस लिए उनके बसाने की व्यवस्था की जाए ।

महोदया, हम ने काश्मीर पर स्टेटमेंट सुना । मंत्री महोदय ने कहा है कि हमने स्कूल बनाने के लिए 25 करोड़ रुपया

दिया है । लेकिन जो स्कूल बनाए जाते हैं, वे जला दिए जाते हैं । पिछले दिसम्बर से वहां कोई स्कूल नहीं चल रहा है । तो लाखों की तादात में जो बच्चे यहां आ गए हैं, उन्हें पढ़ाने की दिल्ली शहर में क्या व्यवस्था है ? महोदया, हमने टेलीविजन पर देखा कि प्रधान मंत्री और श्रम मंत्री दिल्ली की झुग्गियों में जाकर वहां के राशन कार्ड बनाने के निर्देश दे रहे हैं, परंतु इनके राशन कार्ड का क्या होगा । इनके बारे में आप सोचिए । महोदया, मैं आपके माध्यम से इनके लिए एक कंपोजिट प्लान, रिहेबिलिटेशन स्कीम की मांग करता हूं आप इन विस्थापितों के बच्चों के लिए एजुकेशन की व्यवस्था करें, उनके लिए दवाइयों की व्यवस्था करें, उनके लिए शैल्टर का इंतजाम करें । महोदया, अभी कुछ दिनों में बारिश शुरू होने वाली है । परन्तु ये विस्थापित परिवार खुले आम बैठे हैं । उन को शैल्टर की जरूरत है । उनके सिर छुपाने की व्यवस्था सरकार करे ।

महोदया मैं पिछले दिनों माया मैगजीन देख रहा था । उसमें लिखा था कि कुछ विस्थापित धर्मशाला में ठहरे थे । उनको मिलने के लिए कुछ राजनैतिक नेता गए तो उन विस्थापितों ने अपने चेहरे को रुमाल से ढक लिया । उन्हें डर था, दहशत थी कि अगर कोई आतंकवादी उनके चेहरे को पहचान लेगा तो उन्हें मार डालेगा महोदया, आज सेक्यूरिटी के साथ-साथ उनके एम्प्लाइमेंट की व्यवस्था करने की भी जरूरत है । मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं । हमारे गृह मंत्रीजी खुद भी काश्मीरी हैं । वे उनके दुख-दर्द को समझने की कोशिश करेंगे और कहेंगे कि मैं उनके रिहेबिलिटेशन प्रोग्राम को एक कम्पोजित स्कीम बनाता हूं और उनके एम्प्लाइमेंट की व्यवस्था के साथ-साथ जो वहां पर व्यवसायी लोग थे, अपना व्यवसाय छोड़कर यहां आए हैं, उनको कम दरों पर कर्जा दिया जाय ताकि वे लोग अपना व्यवसाय कर सकें । उन लोगों की सुरक्षा की व्यवस्था भी सरकार को करनी चाहिए और जिन पुलिस आफिसरों ने इन विस्थापितों पर प्रधानमंत्री निवास के बाहर लाठी चलवाई है, उनके खिलाफ भी कार्यवाही करने की जरूरत है । धन्यवाद ।

श्रीमती सत्या बहिन (उत्तर प्रदेश) : उपाध्यक्ष महोदया, मैं अहलूवालिया जी की भावनाओं के साथ एसोसियेट करती हूं और यह कहना चाहती हूं कि यह सरकार आतंकवादियों पर कोई काबू नहीं कर सकती और आतंकवाद के शिकार लोगों को भी सुरक्षा नहीं कर सकती है ।

श्री मीर्जा इर्शादबेग (गुजरात) : महोदया, मैं भी एसोसिएट करता हूं । यह जो अहम मसला अहलूवालिया जी ने उठाया है, वह इसलिए उठाया है कि विस्थापितों के आने के बाद कई राजनीति शक्तियां भी हैं, जो उनको अलग ढंग से मोड़ने की कोशिश करती है । इसमें कोई राजनैतिक स्वरूप न आ जाए, इसलिए जरूरी है कि उसकी जो भी व्यवस्था हो वह सरकारी तौर पर हो, सरकार की तरफ से हो । तो मैं समझता हूं कि उनको अच्छे ढंग से रखा जा सकेगा, उनकी हिफाजत भी हो सकेगी, और उनको ज्यादा अच्छी चीजें भी मुहैया करवा सकेंगे ।

श्री तीरथ राम आमला (जम्मू और कश्मीर) : उपसभाध्यक्ष महोदया, मैं भी अहलूवालिया साहब के ख्यालात से, उनके परपोजल से, उनके विचार से अपने आपको सम्मिलित करता हूं ।

SHRI SHABBIR AHMED SALARIA (Jammu and Kashmir): Madam...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): You kindly just associate yourself.

SHRI SHABBIR AHMED SALARIA: It is true, but I will be very short.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): No, you kindly just associate yourself. There is no time.

SHRI SHABBIR AHMED SALARIA: I will finish within a minute.

Madam, it is a fact that somepeople have come here on account of certain developments there. But I must point out that those people have come here, leaving their homes, because of certain mistakes by the State Government. No. 1: They were given to understand by the Governor that there was going to be large-scale action in the Valley and, therefore, better go away from the Valley. No. 2: The condition in the Valley was such —and which is still continuing— that there was no work. There has been curfew for a number of months and, so, some of these people, finding that there was no work to do there, have come here. It is incorrect to say that any communal tension or any communal action is responsible for the coming of any number of persons to this side. In Jammu most of them are there and they are being provided by the Government. Whatever lapse or deficiency is there, the Government is taking steps in that regard. There are lakhs of them still living in Kashmir. They are safe there and they are not coming. But some of them who have been misled and in whom a fear psychosis has been created, have come to this side of the State. Therefore, it is my submission that efforts should be made not only to look after their welfare but also to create conditions congenial for their return, and they should be persuaded to go back home. One thing more.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): I am calling the next speaker. Kindly sit down now.

SHRI SHABBIR AHMED SALARIA: These people should not be used by political parties for their processions. That makes their return difficult, that makes their future difficult. Their misery should not be exploited.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): I am calling the next speaker. Mr. Salaria, please sit down now.

SHRI SHABBIR AHMED SALARIA: The Minister has just left, but I must submit that 3 p.m. was the time given by certain people with regard to the persons who were kidnapped. Will the honourable Minister be coming here to state as to what the latest information is?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Dr. Abrar Ahmed.

Ill-treatment of Orphans at S.O.S Village, Faridabad

डा० अबरार अहमद खान (राजस्थान) : उपसभाध्यक्ष महोदया, सबसे पहले तो मैं भी अहलुवालियां जी के स्पेशल मेंशन का समर्थन करता हूं।

महोदया, मैं आपने इस स्पेशल मेंशन के माध्यम से बाल-ग्राम में जो अनाथ बच्चों के साथ व्यवहार हो रहा है, जो उनको यातनायें दी जा रही है, उसका उल्लेख आपके माध्यम से सरकार के समक्ष करना चाहता हूं। महोदया, वैसे तो हम यह कहते हैं कि बच्चे में भगवान विराजते हैं, हम यह भी सकते हैं कि आज का बालक कल के देश का भविष्य है और यह भी कहा जाता है कि किसी देश का बच्चा स्वस्थ्य हो तो निश्चित रूप से वह देश भी स्वस्थ्य होगा। इस तरह से पचासों तरह की बातें हम रोजमरा कहते हैं यह साबित करते हुए कि अगर हमारे देश का बच्चा अच्छा है, स्वस्थ है तो निश्चित रूप से देश की प्रगति में साधक होगा। लेकिन आज जब मैंने सुबह अखबार में बाल-ग्राम में अनाथ बच्चों के साथ जो जुल्म, ज्यादतियां अन्याय, यातनायें पढ़ी, तो मेरे रोंगटे खड़े हो गए।

महोदया, अनाथ बच्चों को पालने वाले विवादास्पद एस० ओ०एस० बालग्राम आनंदपुर, फरीदाबाद की शाखाओं में अनाथ, मासूम बच्चों को यातनायें दी जाती हैं